S. S. College, Jehanabad

B. A. Part-II Subject- Psychology (Subsidiary)

Teacher - A. K. Sinha - Date-09.04.2021

असामान्य मनोविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास — Page-9

पृष्ठ-8 का शेष

असामान्य मनोविज्ञान के उद्गम का कारण मुख्य रूप दो विचारधाराओं के मनोचिकित्सकों का प्रमुख रहा।

पहला दैहिक दृष्टिकोण वाले मनोवैज्ञानिक तथा मनोचिकित्सक आते हैं। 1757 में Albrecht Von Haller ने "Elements of Physiology" नामक पुस्तक प्रकाशित किया जिसमें मानव की क्रियाओं को समझने के लिए मस्तिष्क का अध्ययन करने की महत्ता बताई। इसके बाद William Griesinger ने "Pathology & therapy of Psychic disorders" नामक पुस्तक प्रकाशित कर बताया कि मानसिक बीमारियों का आधार शारीरिक विकृति है। इसी क्रम में Emil Kreplin ने भी 1883 में एक पुस्तक प्रकाशित कर मानसिक बीमारियों के लिए मस्तिष्कीय विकृति को कारण बताया तथा विभिन्न मानसिक बीमारियों का वर्गीकरण किया। इनके अलावा Kraft Ebing ने sex-disorders पर एक पुस्तक प्रकाशित किया जिसमें दैहिक दृष्टिकोण को चिकित्साशास्त्र का विषय माना।

दूसरा दृष्टिकोण के अन्तर्गत मानसिक बीमारियों के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक आधार दृष्टिगोचर होता है। 20वीं शदी के प्रारम्भ में ही इस नये दृष्टिकोण का प्रारम्भ होने लगा जिसके अन्तर्गत यह अवधारणा बनी कि मानसिक बीमारियाँ शारीरिक कारणों से नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक कारणों से होती हैं। अतः मानसिक बीमारियों के उपचार के लिए उसका मनोवैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। इस मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को जन्म देने का श्रेय Mesmer को दिया जाता है क्योंकि इन्होंने ही Hysteria के रोगियों का अध्ययन के लिए सर्वप्रथम सम्मोहन विधि का इस्तेमाल कर उसका मनोवैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया। वे अपना कार्य वियाना में किये और काफी सफलता प्राप्त की। Hysteria तथा सम्मोहन के बीच के सम्बन्धों का अध्ययन Nancy के Liebeault तथा Bernheim द्वारा भी किया गया। इस दृष्टिकोण के क्षेत्र में (Charcot) शार्कोट,

Date प्रष्ठ -10

जो पेरिस के एक चिकित्सा केन्द्र के प्रधान थे, ने मेसमेरिज्म पर प्रयोगात्मक अध्ययन किया। चूँकि वे एक Neurologist थे इसलिए इन्होंने Hysteria जैसी मानसिक बीमारियों के लिए मस्तिष्क की कमजोरी बताया। Charcot का एक शिष्य Pierre Janet द्वारा Salpetriere Hospital के निदेशक पद का कार्यभार संभाला गया और इन्होंने भी Hysteria तथा सम्मोहन के बीच सम्बन्धों पर अपना शोध कार्य जारी रखा। वास्तव में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का व्यवहारिक रूप से असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास में Dr. Sigmund Freud, जो एक स्नायुरोग चिकित्सक थे, का योगदान सराहनीय है। इसलिए इन्हें आधुनिक मनोविज्ञान का जनक भी कहा जाता है। इन्होंने रोगी के इलाज के क्रम में उनके मनोवैज्ञानिक कारणों का अध्ययन कर उससे सम्बन्धित कई प्रकार के Diagnostic Aproach हेतु निकाले जिसके अन्तर्गत Mental Mechanism, Psychosexual development, Psychopathology of Everyday Life, Aspect of mind इत्यादि की उत्पत्ति इनके द्वारा विकसित मनोविश्लेषण विधि (Psychanalysis) द्वारा ही सम्भव हो सका। आगे चल कर मनोविश्लेषण विधि को मानसिक चिकित्सा विधि के रूप में व्यवहृत किया गया। फ्रायड के सहयोगी Kart Meninger, Alfred Adler तथा C. G. Jund द्वारा इनके कार्यों को आगे बढ़ाया गया तथा नये-नये विचारों एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया।

6. आज का असामान्य मनोविज्ञान :— असामान्य मनोविज्ञान का इस युग का प्रारम्भ 1951 से होता है, 20वीं शदी के पूर्वार्द्ध तक मानसिक रोगियों के उपचार के लिए मानसिक अस्पताल ही मात्र एक सहारा था जिसमें मानसिक रोगियों को एक कमरे में पेरों में बेड़-बकरियाँ डी

तरह इसका ज्ञात था तथा उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था जिसका रोग ठीक होने के बजाय बढ़ जाता था साथ ही साथ अनेक प्रकार की कुरीतियाँ भी पनपने लगी थी जिसका अध्ययन Kisker ने किया और इसके विरुद्ध आवाज उठाये। इसके परिणाम स्वरूप America में मानसिक अस्पतालों की जगह सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र खोले गये। इसी क्रम में Los Angeles के Children Hospital में आत्महत्या निवारण केन्द्र की स्थापना की गई जहाँ दिन-रात Telephonic Contact के माध्यम से मनोचिकित्सक मानसिक रोगियों का उपचार काउंसेलिंग किया जाने लगा। इस प्रकार असामान्य व्यवहारों तथा मानसिक रोगों का उपचार मानवीय मनोवैज्ञानिक प्रविधियों द्वारा किया जाने लगा जिससे प्रभावित होकर दूसरे देश भी इसे अपनाने लगे। बाद में मनोरोगी के चिकित्सा के लिए नये नये मानसिक उपचार (Therapy) का भी प्रयोग होने लगा। जैसे: समूह उपचार विधि, मनोविश्लेषण विधि, रोग-केन्द्रित उपचार व्यवहार उपचार विधि। आदि।